भट्टारक छत्रसेन

जीवन-परिचय : भट्टारक छत्रसेन सेनगण के भट्टारक समन्तभद्र के शिष्य हैं। इन्हें कवियों ने काव्य, पुराण और आगम का ज्ञाता कहा है। आप काव्य रचयिता होने के साथ वाग्मी और प्रतिष्ठाकारक भी थे।

छत्रसेन का समय विक्रम संवत् की 18वीं शती माना जाता है।

रचना-परिचय : छत्रसेन ने संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भाषाओं में रचनाएँ लिखी हैं—

संस्कृत रचनाएँ :

1. पार्श्वनाथपूजा, 2. अनन्तनाथस्तोत्र, 3. पद्मावतीस्तोत्र, 4. मेरूपूजा।

हिन्दी रचनाएँ :

1. द्रौपदीहरण, 2. समवशरणषट्पदी, 3. झूलना, 4. छत्रसेन गुरु आरती।